मानपुर माटी के लाड़ले कामरेड बहादुर बोगा और कामरेड रामलाल यादव जनता के दिलों में सदा जीवित रहेंगे!

प्यारे लोगो,

2005 के आखिर से राजनांदगांव जिले के मानपुर क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार हुआ। इस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए कई नव युवकों और युवतियों ने हाथ में हथियार थामकर जनयुद्ध के मैदान में कदम रखा। इस लूटखोर व्यवस्था को बदलने के लिए अपना अनमोल जीवन समर्पित कर दिया। इन्हीं में शामिल थे कामरेड रामलाल यादव और कामरेड बहादुर बोगा। इन नौजवानों ने पीएलजीए के दस्ते में शामिल होकर पार्टी सदस्यता प्राप्त की और पार्टी के आह्वान पर दूसरे इलाकों में जाकर भी संघर्ष को आगे बढ़ने में अपना योगदान दिया। इन दोनों में से एक ने मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में और दूसरे ने छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में दुश्मन के साथ लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। राजनांदगांव–कांकेर सीमावर्ती डिवीजनल कमेटी इन दोनों साथियों को विनम्रता से श्रद्धांजलि पेश करती है और इस क्षेत्र की समूची जनता का आह्वान करती है कि शहीदों के रास्ते पर आगे बढ़ें और शोषणविहीन नव समाज की स्थापना के लिए जारी माओवादी जनयुद्ध का हिस्सा बनें। आइए, इस मौके पर इन दोनों बहादुर लाल योद्धाओं का जीवन परिचय लें –

कामरेड आकाश (बहादुर बोगा)

कामरेड बहादुर बोगा (आकाश)

16 अगस्त 2011 को पूर्व बस्तर डिवीजन के बयनार इलाके के ग्राम तिरका में छापामारों की एक तीन सदस्यीय टीम रुकी हुई थी। कामरेड्स बदरू, गोपि और आकाश – ये तीन साथी कुछ मिलिशिया सदस्यों के साथ मिलकर सुबह का खाना बना रहे थे। एक मुखबिर से पहले से इसकी खबर पाकर सरकारी सशस्त्र बलों ने गांव को चारों ओर से घेरकर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। हमारे साथियों ने इस हमले का डटकर मुकाबला किया। इस हमले में कामरेड गोपि, आकाश और रामसाय सलाम लड़ते–लड़ते शहीद हो गए जबकि हमारे प्रतिरोध में एसटीएफ का एक भाड़े का जवान मारा गया।

कामरेड आकाश (18) का जन्म राजनांदगांव जिले के मोहला तहसील, जक्के पंचायत, कुमुड़कट्टा गांव में हुआ था। उनके पिता दयालू बोगा एक गरीब किसान हैं। घर में उनका नाम बहादुर था। तीन भाइयों और चार बहनों में वह दूसरी संतान थे। यह गांव पल्लामाड़ी क्षेत्र में आता है जहां पर रायपुर एल्लायज लिमिटेड नामक कम्पनी की लोहा खदान चलती थी। इस लोहा खदान के कारण इस पंचायत के अलावा आसपास के कई गांवों में नदी–नाले, खेत–खलिहान और जंगल–पहाड़ का भारी विनाश हो रहा था। 2007 से इस खदान को बंद करने के लिए जनता ने एक व्यापक आंदोलन शुरू किया जिसमें इस पंचायत की जनता का सक्रिय योगदान रहा। इस संघर्ष का असर कामरेड बहादुर पर था। 2008 में इस क्षेत्र की महामाया खदान पर पीएलजीए ने एक हमला कर करीब दो टन विस्फोटक पदार्थ जब्त कर लिया था। इस विस्फोटक पदार्थ को इस इलाके से विभिन्न इलाकों में पहुंचाने में युवा बहादुर ने भी भाग लिया था। उस समय वह जन मिलिशिया के सदस्य बन चुके थे। उसके बाद 2009 में उन्होंने छापामार दस्ते में भर्ती होने का निर्णय लेकर स्थानीय पार्टी कमेटी के सामने रखा। उन्हें भर्ती करके प्लाटून–23 सदस्य बनाया गया। भर्ती होने के बाद उन्होंने अपना नाम 'आकाश' रखा। 2010 की शुरूआत में उन्हें एक उच्च कमेटी सदस्य के सुरक्षा गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया। इस दौरान उन्होंने अपनी राजनीतिक व सैन्य क्षमताओं को बढ़ाते हुए एक विश्वसनीय साथी के रूप में खुद को विकसित किया। हालांकि कामरेड आकाश आदिवासी गोण्ड समुदाय के थे लेकिन उन्हें गोण्डी भाषा बिल्कुल नहीं आती थी। उनके घर पर छत्तीसगढ़ी बोली जाती थी। पढ़ाई के दौरान हिंदी सीख ली। और पीएलजीए में भर्ती होने के बाद उन्होंने गोण्डी भाषा को अच्छी तरह सीख लिया। 2010 में वह पार्टी सदस्य बने थे। उच्च कमेटी सदस्य के गार्ड रहते समय कामरेड आकाश ने विभिन्न किस्म की तकनीकी कामों में भाग लिया। उन कामों की गंभीरता और गोपनीयता को समझते हुए उन्होंने फौलादी अनुशासन का पालन किया। 2010 में जानी–मानी लेखिका अरुंधति राय और बीबीसी पत्रकार शुभोजित बागची जब दण्डकारण्य के दौरे पर आए थे उनकी सुरक्षा में लगे पीएलजीए के योद्धाओं में कामरेड आकाश भी शामिल थे। वह अपनी जिम्मेदारी निभाने के साथ–साथ उनसे पूछे गए कई सवालों का जवाब देने में... खासकर पार्टी की राजनीति, पीएलजीए के दैनंदिन जीवन व जनता के साथ सम्बन्धों के बारे में उन्हें अवगत करवाने में कामरेड आकाश ने बहुत ही पहलकदमी दिखाई। वह जिस विषय के बारे में जानते थे उसके बारे में अच्छी तरह बता सकते थे। जो नहीं जानते थे तो उसे भी उतनी ही ईमानदारी से कह देते थे। उन्होंने खासकर पत्रकार शुभोजित के दौरे के दौरान उनका काफी ख्याल रखा था। वह हमेशा छाया की

तरह उनका साथ देते थे। कामरेड आकाश की शहादत की खबर सुनकर शुभोजित काफी आहत हुए और उन्होंने एक संदेश में यूं लिखाः ''...यह एक नजदीकी दोस्त और छोटे भाई को खोने जैसा है। वह मेरा बहुत ख्याल रखते थे और बेहद मुश्किल हालात में उन्होंने मेरा बढ़िया साथ दिया। मैं बेहद चिंतित हूं और बुरी तरह परेशान हूं। उनकी जिंदगी और उनके काम दूसरों के लिए प्रेरणादायक होंगे। वह हमारी यादों में हमेशा बने रहेंगे।''

2010 के आखिर में कामरेड आकाश को कम्पनी–6 में सदस्य के रूप में स्थानांतरित किया गया। कम्पनी में रहते हुए उन्होंने फौजी कामकाज को सीखने में पूरा ध्यान लगाया। कम्पनी के रोजमर्रा के जीवन में सभी कामों में उन्होंने उत्साह के साथ भाग लिया। संतरी, व्यायाम, सामूहिक कामकाज, अध्ययन आदि में वह एक आदर्श कामरेड के रूप में विकसित हुए थे। फौजी कार्रवाइयों के सिलसिले में रेकी, स्काउट और खुफिया कामकाज करने में कामरेड आकाश हमेशा आगे रहते थे। कम्पनी पार्टी कमेटी के लिए कामरेड आकाश एक विश्वसनीय और अनुशासनबद्ध सदस्य बने थे।

राजनांदगांव के जिस पल्लामाड़ी क्षेत्र में कामरेड आकाश पैदा हुए थे वहां पर 2007 से ही क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार हुआ था। मुख्य रूप से बस्तर व गढ़चिरोली क्षेत्र से पार्टी कार्यकर्ताओं ने वहां जाकर जनता को संगठित करना शुरू किया। और 2010 आते–आते कामरेड आकाश वहां से पार्टी में भर्ती होकर अपनी जिम्मेदारियों के तहत पूर्व बस्तर आए थे। और जब पार्टी ने उन्हें कम्पनी–6 में काम करने को कहा तो उन्होंने खुशी के साथ स्वीकार किया। सर्वहारा अंतरराष्ट्रीयवाद का परचम ऊंचा उठाते हुए उन्होंने बस्तर की धरती पर अपना खून बहा दिया। आकाश अब हमारे बीच नहीं है लेकिन आकाश अनंत है, आकाश सर्वव्यापी है, आकाश का अंत करना असंभव है। आइए, इस नौजवान क्रांतिकारी के खून से लाल हुए सर्वहारा के झण्डे को ऊंचा उठाकर शोषणविहीन समाज के निर्माण की ओर तेजी के साथ कदम बढ़ाएं।

कामरेड तीजू (रामलाल यादव)

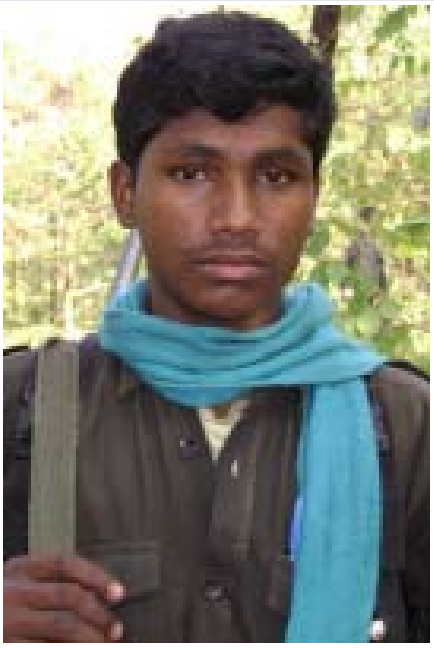

कामरेड रामलाल यादव (विनोद/तीजू)

26 मई 2012 को मध्यप्रदेश के बालाघाट जिला, बैहर तहसील, पालागोंदी गांव के पास पचामादादर के जंगल में पुलिस व कमाण्डो बलों ने पीएलजीए के एक अस्थाई कैम्प पर कातिलाना हमला किया। एक मुखबिर की सूचना पर वहां मौजूद पार्टी नेतृत्व की हत्या करने की साजिश के तहत बड़ी संख्या में घेराबंदी कर यह हमला किया गया। इस हमले का मुकाबला कर पार्टी नेतृत्व की रक्षा करते हुए दो बहादुर कामरेडों ने अपनी जान कुरबान कर दी। कामरेड सगुना और कामरेड तीजू ये दोनों कामरेडों ने पराक्रम का उम्दा प्रदर्शन करते हुए अपना खून बहाया। जहां कामरेड सगुना वहीं मौके पर ही शहीद हो गईं, वहीं कामरेड तीजू को बुरी तरह घायल स्थिति में वहां से साथियों ने उठा लाया था। उन्हें बचाने की पूरी कोशिश करने के बावजूद जख्म गहरे और संगीन होने के कारण कुछ घण्टों बाद उन्होंने दम तोड़ दिया। कामरेड सगुना बालाघाट की माटी में पैदाइश थीं, वहीं कामरेड तीजू दण्डकारण्य के मानपुर डिवीजन से भर्ती होकर गए थे। कामरेड तीजू का जन्म राजनांदगांव जिले के मानपुर तहसील, गांव खुर्सेकला में एक गरीब यादव परिवार में हुआ था। उनकी मां मेहतरिन बाई और पिता मानसिंह यादव हैं। घर पर उनका नाम रामलाल था। 2006 में जब इस क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार हुआ उस समय गठित डीएकेएमएस में उन्होंने सदस्यता ली। 2007 में वह पीएलजीए में भर्ती हुए थे। उसके बाद उन्होंने अपना नाम विनोद बदला था। मदनवाड़ा एलओएस में कुछ समय तक सदस्य के रूप में काम करने के बाद उन्हें कुछ समय के लिए डीवीसी सदस्य के गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया। 2008 में उन्हें पार्टी ने महाराष्ट्र राज्य कमेटी के अंतर्गत गोंदिया–बालाघाट डिवीजन में बदली करने का फैसला किया तो उन्होंने खुशी से मान लिया। तबसे उन्होंने अपना नाम तीजू के रूप में बदल लिया। तबादला होने के बाद उन्होंने वहां पर कुछ समय के लिए फौजी फ्रंट में काम करने के बाद उच्च कमेटी सदस्य के गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने इस भूमिका को अच्छी तरह निभाया। आखिर में दुश्मन ने जब चारों ओर से घेरकर ताबड़तोड़ हमला किया तब कामरेड तीजू बहादुरी का परिचय देते हुए उनसे जमकर लोहा लिया। इसी दौरान बुरी तरह घायल होने पर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। साथियों ने कामरेड तीजू को अश्रुपूर्ण विदाई देते हुए अंतिम संस्कार किया।

अइए, इन तमाम कामरेडों की शहादत को लाल–लाल जोहार पेश करें और उनके अधूरे सपनों को साकार करें।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

राजनांदगांव–कांकेर सीमावर्ती डिवीजनल कमेटी

जनवरी 2013 **दण्डकारण्य**